# * श्रीविद्यारण्य मुनि *

शक्ति-उपासकों में श्रीविद्यारण्य मुनि का विशिष्ट स्थान है। 'श्रीविद्यार्णवतन्त्रम्' जैसा विशालकाय और महत्त्वपूर्ण तन्त्रग्रन्थ ही इनके महान् शक्ति-उपासक होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है। आप भगवत्पाद आद्य शंकराचार्य द्वारा प्रवर्तित दक्षिणमार्गीय श्रीविद्योपासना-सम्प्रदाय के विस्तारक तथा शृंगेरी-मठ के परवर्ती पारम्परीण शंकराचार्य माने जाते हैं।

विद्वद्वर्ग में श्रीविद्यारण्य वैयाकरण, सर्वदर्शन- पारंगत, तन्त्रज्ञ और स्मृति-संग्रहकर्ता के रूप में विख्यात हैं। आपने व्याकरण में **'माधवीय-धातुवृत्ति'**, अद्वैत वेदान्त में **'पञ्चदशी'**, **'अनुभूतिप्रकाश'**, **'अपरोक्षानुभूति'**, **'जीवन्मुक्तिविवेक'**, ऐतरेय, तैत्तिरीय ब्राह्मण-भाष्य, नृसिंहोत्तरतापनी भाष्य, सर्वदर्शनसंग्रह, मीमांसा में- **'जैमिनीय-न्याय-माला-विस्तर'**, धर्मशास्त्र में **'पराशर-माधव'**, **'कालमाधव'** आदि विभिन्न प्रासंगिक शास्त्रों के अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ रचे हैं।

श्रीविद्यारण्य का जन्म सन् १२९६ ई. में हुआ था और निर्वाण सन् १३८६ ई. में। इस प्रकार इन्होंने ९० वर्ष की दीर्घ आयु प्राप्त की थी। कुछ विद्वानों के अनुसार इनका पूर्वाश्रम का नाम **'माधवाचार्य'** था। सन् १३३१ में इन्होंने जब चतुर्थाश्रम ग्रहण किया, तब इनका नाम 'विद्यारण्य' हो गया। माधवाचार्य के पिता का नाम मायण और माता का नाम श्रीमती था। इनके दो भाई थे। एक वेद-भाष्यकार सायणाचार्य और दूसरे भोगनाथ। कहा जाता है कि माधवाचार्य चिरकालतक विजयनगर के महाराज बुक्कराय के मन्त्री रहे और बाद में उन्होंने संन्यास ग्रहण कर लिया। आपका गार्हस्थ्य राजनीति और ग्रन्थ-भण्डारण की वृद्धि में बीता। आपने कुछ वर्ष जयन्तीपुर में राज्याश्रय लिया, उसी संदर्भ में ऐसा भी बताया जाता है कि आपने कोंकण प्रदेश पर भी अधिकार पा लिया था। संन्यास ग्रहण करने के बाद आप शृंगेरीपीठ के अध्यक्ष बने। बुक्कराय ने जब आपसे वेदभाष्य लिखने का अनुरोध किया, तब आपने उनसे कहा कि **'मेरा भाई सायणाचार्य यह कार्य करेगा।'** चारों वेदों पर सायणाचार्य के भाष्य संसार को सुलभ हैं।

श्रीविद्यारण्य मुनि के कई गुरुओं का उल्लेख पाया जाता है। पहले गुरु श्रीविद्यातीर्थ थे। उनके देहावसान के बाद श्रीभारतीतीर्थ गुरु हुए और सन्यासदीक्षा के गुरु थे श्रीशंकरानन्द। **'जैमिनीय-न्यायमालाविस्तार'**- में वे लिखते हैं- **'भारतीतीर्थयतीन्द्र-चतुराननात्'** और 'विवरण-प्रमेयसंग्रह' के प्रारम्भ में लिखते हैं- **'शंकरानन्दपदे हृदब्जे।'** प्रगल्लभाचार्य इनके तन्त्र-विद्या के गुरु थे। यह बात उन्होंने श्रीविद्यार्णव के प्रथम श्वास में तथा सभी श्वासों की पुष्पिका में सर्वत्र बेहिचक, किंतु अत्यन्त श्रद्धापूर्वक लिखी है। 'शिवतत्त्वरत्नाकर' के अनुसार रेवण्णसिद्ध भी इनके गुरुओं में से एक थे। वे शैव होते हुए भी विष्णु, सूर्य, गणपति आदि सबके भक्तथे। देवीके तो परमोपासक थे ही।

**'मध्यकालीन चरित्रकोश'** में श्रीचित्रावशास्त्री कई तर्क और ऐतिहासिक साक्ष्य देकर मानते हैं कि श्रीविद्यारण्य और माधवाचार्य एक नहीं थे। गुरुवंशकाव्य, गुरुपरम्पराचरित, विद्यारण्यकाल-ज्ञान के अनुसार भी ये विद्यातीर्थ के ही छोटे भाई माने जाते हैं। श्रीविद्यार्णव में भी इन्होंने सायण आदि का उल्लेख नहीं किया है। ये सायण के गुरु के रूप में तो सर्वत्र प्रसिद्ध रहे ही हैं। अतः दोनों के घनिष्ठ सम्बन्ध में कोई विवाद नहीं है।